**Report on IPR workshop held at Shoolini University on 16 March 2017**

“Knowledge based economy" plays a key role in wealth creation. Intellectual property (IP) is a method for legally protecting this knowledge. Shoolini University provides opportunity and environment where creativity and talent can flourish. Our scientists are focusing on emerging areas of research such as drug development, novel and effective diagnostics and trerapeutics, water and effluent treatment, novel industrial enzymes, phytomedicines, etc. Keeping in mind the importance of IP, IPR cell was established in 2015. Shoolini University has taken a lead in the region to file 37 Indian patents and 3 PCT (Patent cooperation treaty) in a short span of one and a half year. To promote and inculcate IPR awareness, we organize special seminar and workshops. Based on our research and IP strength, DST-Sponsored IPR cell has been sanctioned to Shoolini University. This cell will work in close collaboration with HP patent information Center (HPPIC) housed in the State Council for Science, Technology, and Environment, H.P (SCSTE). To promote awareness of intellectual property rights of the individual, Shoolini University has created an annual budget of Rs 15 lakh for the year 2016-17.

To promote awareness about IPR and GI among students and faculty members, a one day workshop on intellectual property rights (IPR) and geographical indications (GI) was jointly organized by IPR Cell at Shoolini University, Faculty of Applied Sciences and Biotechnology and SCSTE, Shimla. More than 225 delegates attended the workshop. Prof. Kamal Dev, coordinator of IPR cell briefed about the genesis of the workshop and highlighted the cutting edge research areas in which Shoolini University has filed 37 Indian patents and 3 international patents. He highlighted the thrust areas of IPR cell at Shoolini University. Prof. Sunil Puri, Registrar formerly welcome the dignitaries and

stressed on vision and mission of the University in promoting IPR culture among students and faculty members. The Chief Guest of the function, Shri Kunal Satyarthi, IFS, joint member secretary, SCSTE briefed the audience about the role of Himachal Pradesh patent information center (HPPIC) and SCSTE. He said that Government has taken initiatives to create biodiversity board at the Gram Panchayat level to protect the indigenous Geographical indications and traditional knowledge. He stressed on the need to inculcate IPR awareness in young minds and ignite scientific temper about patents, copyright, trademark, geographical indications. He also briefed about the thrust areas of the SCSTE, where Shoolini University could play a joint role. Dr Archana Thakur and Mr Ankush from SCSTE talked about the role and importance of prior art search and trademarks respectively. Dr Parikshit Bansal, Director Corporate IP consultants, Chandigarh talked about the importance of IPR to students and scientists of the University. Corporate IP Consultants felicitated all the shoolini Inventors. Dr Nandan, MAU, Baddi spoke on importance of copyright. A quiz session on IPR was also conducted. The workshop was closed with vote of thanks to Chief guest, Shri Kumal Satyarthi, SCSTE, HPPIC for sponsoring the workshop and all the participants by Prof. Neeraj Mahindroo.

Prof. Kamal Dev

Coordinator

SIPRC (Shoolini Intellectual Property Right Cell)

Shoolini University

Solan

Email: kamaldev@shooliniuniversity.com

Phone: +91-9418653905

आपका फैसला

शिमला, शनिवार, 18 मार्च 2017

## शूलिनी विवि में 225 विशेषज्ञों ने साझा किए अपने विचार

# छात्रों में आईपीआर जागरुकता पैदा करने की जरूरत

जिला ब्यूरो प्रमुख

सोलन, 17 मार्च। ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था धन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और बौद्धिक संपदा (आईपी) कानूनी रूप से इस ज्ञान की सुरक्षा के लिए एक विधि है। यह विचार विशेषज्ञों द्वारा शूलिनी विश्वविद्यालय में आयोजित बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) और भौगोलिक संकेतक (जीआई) पर आधारित एक कार्यशाला के दौरान द्वारा व्यक्त किए गए। इस कार्यशाला का आयोजन शूलिनी विश्वविद्यालय के अप्लाइड साइंस और बायोटेकनोलोजी संकाय, आइपीआर सेल और हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण राज्य परिषद (एससीएसटीआई) द्वारा सयुंक्त रूप से करवाया गया। करीब 225 से अधिक प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों और शिक्षाविदों के बीच आईपीआर और जीआई के बारे में जागरुकता लाना है। इस मौके पर एससीएसटीई के जाइंट मेंबर सेक्रेटरी कुणाल सत्यर्थी, मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने हिमाचल प्रदेश पेटेंट सूचना केंद्र (एचपीपीआईसी) और एससीएसटीई की भूमिका के बारे में दर्शकों को बताया। अपने व्याख्यान में उन्होंने पारंपरिक ज्ञान की रक्षा के लिए सरकार द्वारा ग्राम पंचायत स्तर पर जैव विविधता बोर्ड बनाने के प्रयासों के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने युवाओं में आईपीआर जागरुकता पैदा करने और पेटेंट, कॉपी राइट, ट्रेडमार्क और जीआई के बारे में वैज्ञानिक स्वभाव को प्रज्वलित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। अन्य प्रमुख वक्ताओं में एससीएसटीई के डॉ अर्चना ठाकुर और अंकुश ने पूर्व कला खोज और ट्रेडमार्क की भूमिका और महत्व के बारे में बताया, जबकि एमएयू बड्डी के डा.नंदन ने कॉपी राइट के महत्व पर बात की। कॉपोरेट आईपी कंसल्टेंट्स, चंडीगढ़ के निदेशक डा. परीक्षित बंसल ने छात्रों और वैज्ञानिकों को आईपीआर के महत्व पर प्रकाश डाला और शूलिनी के अन्वेषकों को सम्मानित किया। आईपीआर सेल के समन्वयक प्रो.कमल देव ने कार्यशाला के बारे में जानकारी देते हुए उन अत्याधुनिक अनुसंधान क्षेत्रों पर प्रकाश डाला, जिसमें शूलिनी विश्वविद्यालय ने 37 भारतीय और तीन अंतरराष्ट्रीय पेटेंट दायर किए है। शूलिनी विश्वविद्यालय का पेटेंट सेल वर्ष 2015 में स्थापित हुआ था। दो वर्षों से भी कम समय में यह सेल ने दवा विकास, प्रभावी निदान और चिकित्सा विज्ञान, जल और प्रवाह उपचार, औद्योगिक एंजाइम, फाइटोमेडीसिन इत्यादि में अनुसंधान कर पैटंट दायर किए हैं। इसी के कारण शूलिनी को डीएसटी प्रायोजित आईपीआर सेल भी स्वीकृत हुआ है। यह सेल एचपीपीआईसी और एससीएसटीई के सहयोग में काम करता है।

दैनिक भास्कर
शिमला, शनिवार 18 मार्च, 2017

# स्टूडेंट्स को बताया ट्रेडमार्क कॉपीराइट, पेटेंट का महत्व

## बौद्धिक संपदा अधिकार पर शूलिनी में कार्यशाला

शूलिनी यूनिवर्सिटी में आयोजित कार्यशाला में भाग लेते छात्र व अन्य।

सिटी रिपोर्टर | सोलन

ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था धन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बौद्धिक संपदा (आईपी) कानूनी रूप से इस ज्ञान की सुरक्षा के लिए एक विधि है। यह विचार विशेषज्ञों द्वारा शूलिनी विश्वविद्यालय में आयोजित बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) और भौगोलिक संकेतक (जीआई) पर आधारित एक कार्यशाला के दौरान द्वारा व्यक्त किए गए।

कार्यशाला का आयोजन शूलिनी विश्वविद्यालय के अप्लाइड साइंस और बायोटेकनोलोजी संकाय, आईपीआर सेल और विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण राज्य परिषद (एससीएसटीई) द्वारा संयुक्त रूप से करवाया गया। 225 से अधिक प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों और शिक्षाविदों में आईपीआर, जीआई के बारे में जागरुकता लाना है।

इस अवसर पर एससीएसटीई के ज्वाइंट मेंबर सेक्रेटरी कुणाल सत्यर्थी, मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने हिमाचल प्रदेश पेटेंट सूचना केंद्र (एचपीपीआईसी) और एससीएसटीई की भूमिका के बारे में दर्शकों को बताया। उन्होंने युवाओं में आईपीआर जागरुकता पैदा करने और पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क और जीआई के बारे में वैज्ञानिक स्वभाव को प्रज्ज्वलित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। एससीएसटीई के डॉ. अर्चना ठाकुर और अंकुश ने ट्रेडमार्क, एमएयू बद्दी के डॉ. नंदन ने कॉपीराइट का महत्व बताया। कॉरपोरेट आईपी कंसल्टेंट्स, चंडीगढ़ के निदेशक डॉ. परीक्षित बंसल ने छात्रों और वैज्ञानिकों को आईपीआर के महत्व पर प्रकाश डाला और शूलिनी के अन्वेषकों को सम्मानित किया। आईपीआर सेल के समन्वयक प्रोफेसर कमल देव ने बताया कि शूलिनी विश्वविद्यालय ने 37 भारतीय और तीन अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट दायर किए है।

DNS
दैनिक न्याय सेतु
शनिवार 18 मार्च, 2017

# छात्रों में आईपीआर जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता बताई

## शूलिनी विवि में आयोजित कार्यशाला में बोले विशेषज्ञ

■ डीएनएस न्यूज. सोलन

ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था धन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और बौद्धिक संपदा (आईपी) कानूनी रूप से इस ज्ञान की सुरक्षा के लिए एक विधि है। यह विचार विशेषज्ञों द्वारा शूलिनी विश्वविद्यालय में आयोजित बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) और भौगोलिक संकेतक (जीआई) पर आधारित एक कार्यशाला के दौरान द्वारा व्यक्त किए गए। इस कार्यशाला का आयोजन शूलिनी विश्वविद्यालय के अप्लाइड साईंस और बायोटेक्नोलॉजी संकाय, आईपीआर सेल और हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण राज्य परिषद (एससीएसटीई) द्वारा स्युंक्त रूप से करवाया गया। कार्यशाला में 225 से अधिक प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों और शिक्षाविदों के बीच आईपीआर और जीआई के बारे में जागरूकता लाना था।

इस अवसर पर एससीएसटीई के ज्वाइंट मेंबर सेक्रेटरी कुणाल सत्यर्थी मुख्यातिथि रहे। उन्होंने हिमाचल प्रदेश पेटेंट सूचना केंद्र (एचपीपीआईसी) और एससीएसटीई की भूमिका के बारे में दर्शकों को बताया। अपने व्याख्यान में उन्होंने पारंपरिक ज्ञान की रक्षा के लिए सरकार द्वारा ग्राम पंचायत स्तर पर जैव विविधता बोर्ड बनाने के प्रयासों के बारे में भी जानकारी दी। अन्य प्रमुख वक्ताओं में एससीएसटीई के डॉ. अर्चना ठाकुर और अंकुश ने पूर्व कला खोज और ट्रेडमार्क की भूमिका और महत्व के बारे में बताया, जबकि एमएयू बद्दी के डॉ. नंदन ने कॉपीराइट के महत्व पर बात की। कॉरपोरेट आईपी कंसल्टेंट्स, चंडीगढ़ के निदेशक डॉ.परीक्षित बंसल ने छात्रों और वैज्ञानिकों को आईपीआर के महत्व पर प्रकाश डाला और शूलिनी के अन्वेषकों को सम्मानित किया। आईपीआर सेल के समन्वयक प्रोफेसर कमल देव ने कार्यशाला के बारे में जानकारी देते हुए उन अत्याधुनिक अनुसंधान क्षेत्रों पर प्रकाश डाला जिसमें शूलिनी विश्वविद्यालय ने 37 भारतीय और तीन अंतरराष्ट्रीय पेटेंट दायर किए हैं। शूलिनी विश्वविद्यालय का पेटेंट सेल वर्ष 2015 में स्थापित हुआ था।

सोलन. शूलिनी विवि में आयोजित कार्यशाला के दौरान विद्यार्थी विशेषज्ञों के साथ सामूहिक चित्र में।

दैनिक सवेरा टाइम्स

# 'ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की है धन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका'

सोलन, 17 मार्च (विशाल) : ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था धन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और बौद्धिक संपदा (आईपी) कानूनी रूप से इस ज्ञान की सुरक्षा के लिए एक विधि है। यह विचार विशेषज्ञों द्वारा शूलिनी विश्वविद्यालय में आयोजित बौद्धिक संपदा अधिकार (आई.पी.आर.) और भौगोलिक संकेतक (जी.आई.) पर आधारित एक कार्यशाला के दौरान द्वारा व्यक्त किए गए। इस कार्यशाला का आयोजन शूलिनी विश्वविद्यालय के अप्लाइड साइन्स और बायोटैक्नोलॉजी संकाय, आई.पी.आर. सेल और हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण राज्य परिषद (एस.सी.एस.टी.ई.)द्वारा स्युंक्त रूप से करवाया गया।

छात्रों को जानकारी देते कुणाल सत्यर्थी।

225 से अधिक प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों और शिक्षाविदों के बीच आई.पी.आर. और जी.आई. के बारे में जागरूकता लाना है।

इस अवसर पर एस.सी.एस.टी.ई. के जाइंट मेम्बर सैक्रेटरी कुणाल सत्यर्थी, मुख्यातिथि रहे। अन्य प्रमुख वक्ताओं में एससीएसटीई के डा. अर्चना ठाकुर और अंकुश ने पूर्व कला खोज और ट्रेडमार्क की भूमिका और महत्व के बारे में बताया, जबकि एम.ए.यू. बड्डी के डा. नंदन ने कॉपीराइट के महत्व पर बात की। कॉर्पोरेट आईपी कंसल्टेंट्स, चंडीगढ़ के निदेशक डा. परीक्षित बंसल ने छात्रों और वैज्ञानिकों को आईपीआर के महत्व पर प्रकाश डाला और शूलिनी के अन्वेषकों को सम्मानित किया।

दैनिक जागरण चंडीगढ़, 18 मार्च 2017

सोलन के शूलिनी विश्वविद्यालय में बौद्धिक संपदा अधिकार व भौगोलिक संकेतक पर आयोजित कार्यशाला में उपस्थित विद्यार्थी व अन्य • जागरण

# 225 प्रतिनिधियों ने किया बौद्धिक संपदा अधिकार पर विचार-विमर्श

संवाद सहयोगी, सोलन : ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था धननिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और बौद्धिक संपदा (आइपी) कानूनी रूप से इस ज्ञान की सुरक्षा के लिए एक विधि है। यह विचार विशेषज्ञों द्वारा शूलिनी विश्वविद्यालय में आयोजित बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) और भौगोलिक संकेतक (जीआई) पर आधारित एक कार्यशाला के दौरान व्यक्त किए।

कार्यशाला का आयोजन शूलिनी विश्वविद्यालय के अप्लाइड साइंस और बायोटेक्नोलॉजी संकाय, आइपी आर सेल और हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण राज्य परिषद (एससीएसटीई) द्वारा सयुंक्त रूप से करवाया गया। 225 से अधिक

और शिक्षाविदों के बीच आईपीआर और जीआई के बारे में जागरूकता लाना है। इस अवसर पर एससीएसटीई के जाइंट मेंबर सेक्रेटरी कुणाल सत्यार्थी मुख्यातिथि रहे। उन्होंने हिमाचल प्रदेश पेटेंट सूचना केंद्र (एचपीपीआईसी) और एससीएसटीई की भूमिका के बारे में छात्रों को बताया।

उन्होंने युवाओं में आइपीआर जागरूकता पैदा करने और पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क व जीआई के बारे में वैज्ञानिक स्वभाव को प्रज्जवलित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। अन्य प्रमुख वक्ताओं में एससीएसटीई की डॉ अर्चना ठाकुर और अंकुश ने पूर्व कला खोज और ट्रेडमार्क की भूमिका और महत्व के बारे में बताया। इस

सोलन : शूलिनी वि.वि. में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते छात्र-छात्राएं। (प्रदीप)

# ट्रेडमार्क की भूमिका बारे बताया

सोलन, 17 मार्च (ब्यूरो): ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था धन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और बौद्धिक संपदा (आई.पी.) कानूनी रूप से इस ज्ञान की सुरक्षा के लिए एक विधि है। ये विचार विशेषज्ञों द्वारा शूलिनी विश्वविद्यालय में आयोजित बौद्धिक संपदा अधिकार (आई.पी.आर.) और भौगोलिक संकेतक (जी.आई.) पर आधारित एक कार्यशाला के दौरान व्यक्त किए गए। इस कार्यशाला का आयोजन शूलिनी विश्वविद्यालय के अप्लाइड साइंस और बायोटैक्नोलॉजी संकाय, आई.पी.आर. सैल और हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण राज्य परिषद (एस.सी.एस.टी.ई.) द्वारा संयुक्त रूप से करवाया गया। 225 से अधिक प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों और शिक्षाविदों के बीच आई.पी.आर. और जी.आई. के बारे में जागरूकता लाना है।

इस अवसर पर एस.सी.एस.टी.ई. के ज्वाइंट मैंबर सैक्रेटरी कुणाल सत्यार्थी मुख्य अतिथि रहे। इन्होंने हिमाचल प्रदेश पेटैंट सूचना केंद्र (एच.पी.पी.आई.सी.) और एस.सी.एस.टी.ई. की भूमिका के बारे में दर्शकों को बताया। अन्य प्रमुख वक्ताओं में एस.सी.एस.टी.ई. की डा. अर्चना ठाकुर और अंकुश ने पूर्व कला खोज और ट्रेडमार्क की भूमिका और महत्व के बारे में बताया जबकि एम.ए. यूबड्डी के डा. नंदन ने कॉपी राइट के महत्व पर बात की। कॉर्पोरेट आई.पी. कंसल्टैंट्स चंडीगढ़ के निदेशक डा. परीक्षित बंसल ने छात्रों और वैज्ञानिकों को आई.पी.आर. के महत्व पर प्रकाश डाला और शूलिनी के अन्वेषकों को सम्मानित किया। आई.पी.आर. सैल के समन्वयक प्रो. कमल देव ने कार्यशाला के बारे में जानकारी देते हुए उन अत्याधुनिक अनुसंधान क्षेत्रों पर प्रकाश डाला, जिसमें शूलिनी विश्वविद्यालय ने 37 भारतीय और 3 अंतर्राष्ट्रीय पेटैंट दायर किए हैं।

शूलिनी विश्वविद्यालय का पेटैंट सैल वर्ष 2015 में स्थापित हुआ था। 2 वर्षों से भी कम समय में इस सैल ने दवा विकास, प्रभावी निदान और चिकित्सा विज्ञान, जल और प्रवाह उपचार, औद्योगिक एंजाइम व फाइटोमैडीसिन इत्यादि में अनुसंधान कर पेटैंट दायर किए हैं। इसी के कारण शूलिनी को डी.एस.टी. प्रायोजित आई.पी.आर. सैल भी स्वीकृत हुआ है। यह सैल एच.पी.पी.आई.सी. और एस.सी.एस.टी.ई. के सहयोग में काम करता है।

अमर उजाला
चंडीगढ़
शनिवार, 18 मार्च 2017

शूलिनी विवि में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मौजूद विद्यार्थी और शिक्षक। अमर उजाला

# धन निर्माण में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका

सोलन। ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था धन निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बौद्धिक संपदा कानूनी रूप से इस ज्ञान की सुरक्षा के लिए एक विधि है। यह जानकारी शूलिनी विवि में आयोजित बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) और भौगोलिक संकेतक (जीआई) पर आधारित कार्यशाला के दौरान वक्ताओं ने दी। शूलिनी विवि के अप्लाइड साइंस और बायोटेक्नोलॉजी संकाय, आइपीआर सेल और प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा पर्यावरण राज्य परिषद द्वारा संयुक्त रूप से करवाया गया। इस अवसर पर एससीएसटीई के संयुक्त सदस्य सचिव कुणाल सत्यार्थी, डॉ. अर्चना ठाकुर और अंकुश, आईपीआर सेल के समन्वयक प्रो. कमल देव ने कार्यशाला के बारे में जानकारी दी। ब्यूरो

हिमाचल दस्तक

# छात्रों में जागरुकता पैदा करने की आवश्यकता

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। सोलन

ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था धन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और बौद्धिक संपदा (आईपी) कानूनी रूप से इस ज्ञान की सुरक्षा के लिए एक विधि है। यह विचार विशेषज्ञों द्वारा शूलिनी यूनिवर्सिटी में आयोजित बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) और भौगोलिक संकेतक (जीआई) पर आधारित एक कार्यशाला के दौरान द्वारा व्यक्त किए गए। विवि पीआरओ सुचेत अत्री ने बताया की कार्यशाला का आयोजन शूलिनी विवि के अप्लाइड साइंस और बायोटेक्नोलॉजी संकाय, आईपीआर सेल और हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण राज्य परिषद (एससीएसटीई) द्वारा संयुक्त रूप से करवाया गया। 225 से अधिक प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों और शिक्षाविदों के बीच आईपीआर और जीआई के बारे में जागरुकता लाना है।

*कार्यशाला में भाग लेने वाले विशेषज्ञ, फैकल्टी सदस्य व छात्र।*

इस अवसर पर एससीएसटीई के ज्वाइंट मेंबर सेक्रेटरी कुणाल सत्यर्थी मुख्यातिथि रहे। उन्होंने पारंपरिक ज्ञान की रक्षा के लिए सरकार द्वारा ग्राम पंचायत स्तर पर जैव विविधता बोर्ड बनाने के प्रयासों के बारे में भी जानकारी दी। साथ ही उन्होंने युवाओं में आईपीआर जागरुकता पैदा करने और पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क और जीआई के बारे में वैज्ञानिक स्वभाव को प्रज्वलित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। एससीएसटीई के डॉ. अर्चना ठाकुर और अंकुश ने पूर्व कला खोज और ट्रेडमार्क की भूमिका और महत्व के बारे में बताया जबकि एमएयू बद्दी के डॉ. नंदन ने कॉपीराइट के महत्व पर बात की। कॉर्पोरेट आईपी कंसल्टेंट्स चंडीगढ़ के निदेशक डॉ. परीक्षित बंसल ने छात्रों और वैज्ञानिकों को आईपीआर के महत्व पर प्रकाश डाला और शूलिनी के अन्वेशकों को सम्मानित किया।

## UTILISATION CERTIFICATE

For the financial year 2016-17

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | Name of the IPR Cell | : | **SIPRC (Shoolini Intellectual Property Right Cell)** |
| 2. | Name of the organization/ institute | : | **Shoolini University** |
| 3. | Coordinator of the IPR Cell | : | **Prof. Kamal Dev** |
| 4. | HPPIC, SCSTE grant Letter No and date of establishment of the Centre | : | **SCSTE/HPPIC-8601** |
| 5. | Total amount that was available for expenditure (including commitments) | : | **Rs. 40,000** |
| 6. | Actual expenditure (Including commitments/Committed liability) incurred during a financial year) | | **Rs. 63716** |
| 7. | Balance amount available at the end of a financial Year (upto 31st March ) | : | **Nil** |
| 8. | Unspent balance refunded if any (please give details of cheque/DD No. etc.) | : | **Nil** |

Certified that the expenditure of **Rs. 40,000 (Rupees forty thousand only)** mentioned against column 6 was actually incurred for the activities of IPR Cell for the purpose for which it was sanctioned.

Place: Solan

Date: 29/03/2017

Coordinator

Controller (Accounts & Finance)

Head of the Office

Registrar
Shoolini University of Biotechnology
& Management Sciences
SOLAN (HP)

Accepted and countersigned

Comptroller (Finance)
Shoolini University of Biotechnology
& Management Sciences
Bajhol Campus, Solan (H.P.)

Place:

Date:

# WORKSHOP
# ON
# INTELLECTUAL PROPERTY RIGHTS (IPR)
# AND
# GEOGRAPHICAL INDICATIONS (GI)

**March 16, 2017**

***Jointly Organized by***

**IPR Cell**
**& Faculty of Applied Sciences and Biotechnology, Shoolini University, Solan**

**&**

**Himachal Pradesh Patent Informtion Centre ( HPPIC), SCSTE, Shimla, H.P.**

**Kamal Dev, PhD**
**Coordinator, SIPR Cell**

# Shoolini University: Milestones

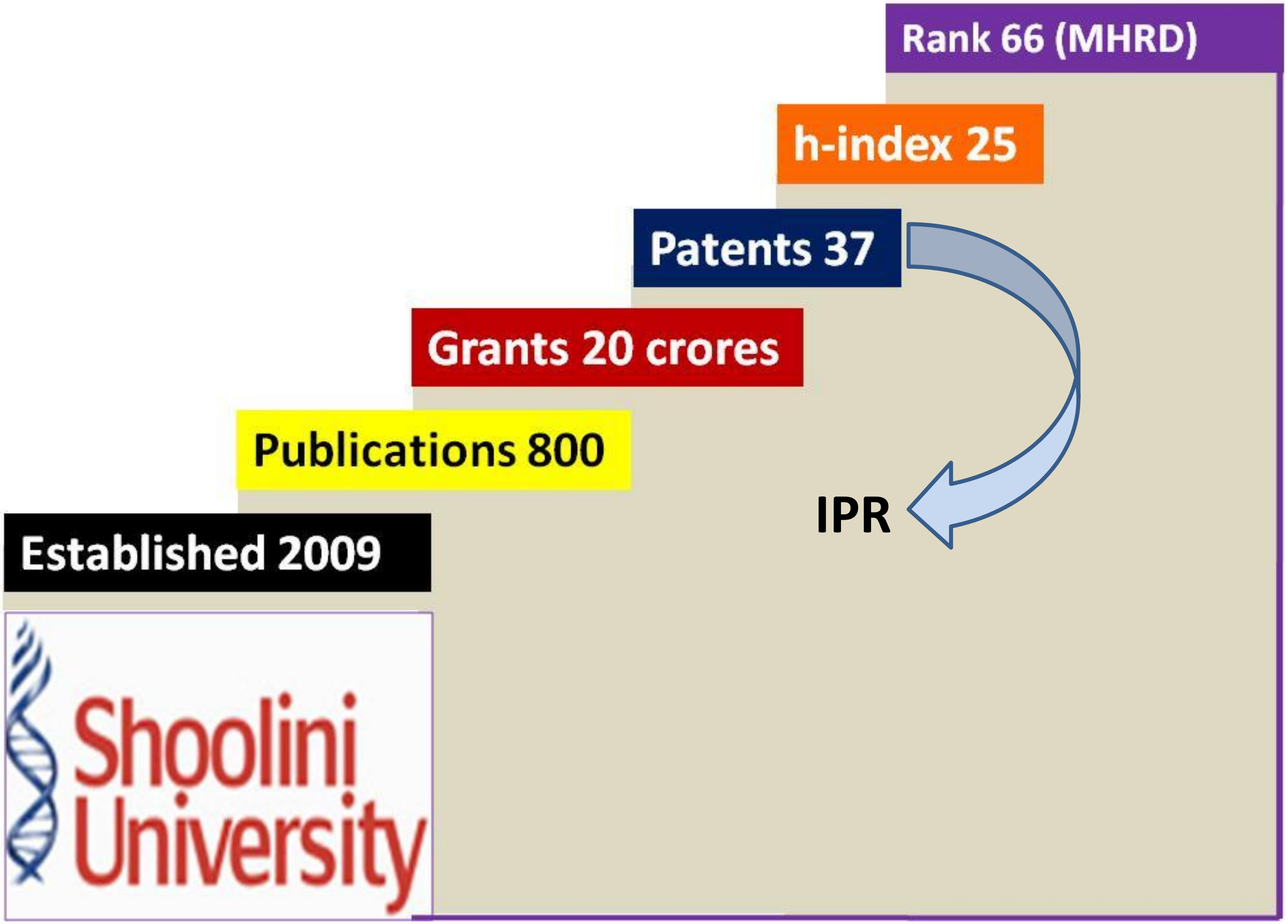

# Shoolini University: IPR Milestones

Award of IP cell by HPPIC, SCSTE

Technology transfer initiatives

International Patent filing

Indian Patent Filing

2015: Corporate consultants

2014: Established IPR Cell

| May 4, 2015 | First patent filed |
|---|---|
| Dec. 2015 | 20 Patents |
| Dec. 2016 | 33 Patents |
| Current | 37 + 3 PCT |

# Functionaries of IPR Cell

| Name | Designation |
|---|---|
| Dr Kamal Dev | Coordinator |
| Dr Kalpana Chauhan | Co-coordinator |

# Vision and Mission of IPR Cell

- **Increase the awareness and innovation quotient of the young minds.**

- **Train and provide awareness about IPR and GI to students and scientists.**

- **Promote IPR and GI based economic development.**

**New** (novelty)

**Inventive** step (non-obviousness)

**Utility** -industrial application

**“Knowledge based economy"**

# Initiatives and progress of IPR Cell

- **Filed 37 Indian Patents and 3 International Patents (PCT)**

- **14 Indian Patents and 2 PCT published for pre-grant approval**

- **Technology transfer and licensing initiatives are taken**

- **Joint Workshop on IPR and GI being organized**

- **Submitted joint research proposal (with HPPIC) on GI of HP for societal development: NMHS, Rs 4.5 crores**

# Glimpse of Patents

| Name of the Faculty | Indian Patents | PCT, International |
|---|---|---|
| Applied Sciences and Biotechnology | 17 | 2 |
| Basic Sciences | 13 | 1 |
| Pharmaceutical Sciences | 5 | - |
| Engineering | 2 ( 1 granted) | - |

| | | |
|---|---|---|
| Multidrug Resistance | Diagnostics & Therapeutics | Water & Effluent treatment |
| Anticancer | Drug Delivery | Novel industrial Enzymes |
| Beverages | Antenna Miniaturization | Flying Chair & Overtake Technology |

**14 Indian patents and 2 PCT published for pre-grant approval**

# Diagnostics and Drug development

| Area | Title | Inventors | Patent Application no |
|---|---|---|---|
| Multidrug Resistance | Terpenoids from *Colebrookea oppositifolia* as activity enhancers of antibiotic compositions and extraction method thereof. | Kamal Dev, Anuradha Sourirajan, Vipasha Sharma | 1326/DEL/ 2015 |
| | Compounds for enhancing activity of antibiotic compositions against drug sensitive and drug resistant bacteria. | Kamal Dev, Kazal Pathania | 1429/DEL/ 2015 |
| | Compounds from *Vitex nigundo* for enhancing antibiotic activity and overcoming drug resistance. | Kamal Dev, Anuradha Sourirajan, Sonika Gupta | 1464/DEL/ 2015 |
| | Compound for enhancing activity of antibiotic compositions and overcoming drug resistance. | Umar Farooq, Tanuja Rana, Navroop Kaur | 1229/DEL/ 2015. |
| Diagnostics & Therapeutics | Novel peptide sequence for developing diagnostic agents for malaria detection. | Umar Farooq, Nazam Khan, Shakti Pal Singh Chauhan | 1228/DEL/ 2015 |
| | Novel peptide sequences for developing anti-malaria vaccines and therapeutic compositions. | Umar Farooq, Nazam Khan, Shakti Pal Singh Chauhan | 1465/DEL/ 2015 |
| | Novel peptide from *Plasmodium falciparum* for anti-malarial vaccine | Umar Farooq,Shakti Pal Chauhan, Nazam Khan | 3887/DEL/2 015 |
| | Novel peptides for diagnosis of cystic echinococcosis | Umar Farooq, Varun Chauhan | 4198/DEL/ 2015 |

# Diagnostics and Drug development

| | | | |
|---|---|---|---|
| Diagnostics and therapeutics | Novel peptide sequences from the parasite *Echinococcus granulosus* for producing anti-cystic echinococcosis vaccine. | Umar Farooq, Varun Chauhan, Azhar Khan | 4116/DEL/2015 |
| | Novel compounds possessing anti-echinococcal activity. | Umar Farooq, Varun Chauhan | Application no. 201611004817 |
| | Novel anti-Leishmaniasis compound and method of production thereof | Afroze Alam and K.L Dhar | Application No. 201611022602 |
| | Improved vesicular formulation of thymoquinone for the treatment of dermal inflammatory disorders and method thereof | Poonam Negi, Charul Rathore, Ishita Sharma | Application no 201711002485 |
| | Chitosan-g-poly (acrylamide)/copper nanocomposite for controlled drug delivery. | Deepak Pathania and Divya Gupta | 1875/DEL/2015 |
| | Novel herbal anticancer compound and method of production thereof | Afroze Alam and KL Dhar | 1913/DEL/2015 |
| | Novel anti-Leishmaniasis compound and method of production thereof | Afroze Alam and Aditya Shiven | Application no 201611043705` |
| | Novel anticancer compound isolated from *Brugmansia suaveolens* and method thereof | Neeraj Mahindroo, Sunil Kumar, Aditi Gupta, Reena Saini, K.L. Dhar | Application no 201611040684 |

# Water treatment & Effluent treatment

| | | | |
|---|---|---|---|
| Water & Effluent treatment | Nanocomposite for antimicrobial treatment of drinking water. | Deepak Pathania, Rishu Katwal and Gaurav Sharma | 1897/DEL/2015 |
| | Novel chitosan based nanocomposite with antibacterial activity for water treatment and production method thereof | Deepak Pathania, Divya Gupta, SwadeepSood | 4255/DEL/2015 |
| | Novel nanocomposite for treatment of effluents containing dyes and method thereof | Deepak Pathania, Divya Gupta, Amit Kumar | Application no. 201611011100 |
| | Novel nano graphene based composite for water treatment application and method of synthesis thereof | Pradeep Singh | 1819/DEL/2015 |
| | Nanocomposite for removal of dye based water pollutants | Deepak Pathania and RishuKatwal | 1537/DEL/2015 |
| | Nano cobalt iron biochar for recycling of used/waste oil and method thereof | Amit Kumar, Ajay Kumar Gaurav Sharma, Deepak Pathania, Sunil Kumar | Application no 201611037781 |
| | Nanocomposite gel for oil spill remediation and method thereof | Amit Kumar, Ajay Kumar, Gaurav Sharma | Application no 201611036282 |
| | Synergistic graphene sand nano composites for antibiotic degradation in waste water and method thereof | Pankaj Raizada, Pooja Shandilya, Rashi Dhiman, Pradeep Singh | Application number: 201711004067 |

# Industrially Important Enzymes and Beverages

| | | | |
|---|---|---|---|
| **Novel enzymes and Proteins** | **A novel microbe producing extracellular β-galactosidase and method of enzyme production thereof** | **Kamal Dev and Tarun Kumar** | **1895/DEL/2015** |
| | **Novel microbe producing xylanase and method of enzyme production thereof** | **Amit Seth, Shweta Chauhan, Chandrika Attri Seth, Varun Jaiswal** | **1846/DEL/2015** |
| | **Microbially produced antifreeze protein(s) and method of production thereof** | **Kamal Dev, AnuradhaSourirajan, Ranjana Suman** | **3886/DEL/2015** |
| | **Novel alcohol free process for extraction of zein and xanthophylls** | **Dinesh Kuamr and Sampy Duggal** | **Application no 201611031746** |
| **Beverages** | **Improved persimmon wine with enhanced antioxidant activity and standardized method of production thereof** | **Somesh Sharma, Kiran Mahant** | **3884/DEL/2015** |
| | **Novel nanocomposite for therapeutic use as immunostimulator and method thereof** | **Reena Vohra Saini, Adesh Kumar saini, Indu Hira, Amit Kumar.** | **Application number: 201611007222** |
| | **Novel microbe for assessing in vivo antioxidant status of foods and method thereof** | **Adesh Kumar Saini, Christine Coe Winterbourn, Vikas Kumar, Reena Vohra Saini, Rakesh Kumar, Ashu Poswal.** | **Application number: 201711007132** |

# Improvisation of Technology

| | | | |
|---|---|---|---|
| **OTHERS** | **Novel benzothiazole derivatives with enhanced biological activity** | **Kalpana Chauhan and BhawanaKumari** | **2484/DEL/2015** |
| | **Nano ferrite substrate and its process of production for use in large bandwidth miniaturized antenna** | **Atul Thakur and Preeti Thakur** | **Application no. 201611013315** |
| | **Magneto-dielectric substrate for miniaturized microstrip patch antenna for use in high bandwidth in uhf band** | **Atul Thakur and Preeti Thakur** | **Application No. 201611018053** |
| | **Nano composites material with enhanced magnetic properties** | **Atul Thakur , Preeti Thakur, Kush Rana** | **Application No. 201611022599** |
| | **Flying Chair (Design patent)** | **Shoolini university and Sorabh Aggarwal.** | **Design application number 280329 11/02/2016 (Awarded)** |
| | **Safe Overtake Assist Technology** | **Adit Rana** | **Application no 201611023982** |

# International Patents (PCT)

| | | | |
|---|---|---|---|
| **1** | **Compound for enhancing activity of antibiotic compositions and overcoming drug resistance** | **Umar Farooq, Tanuja Rana, Navroop Kaur** | **International Application no. PCT/IN2016/000115** |
| **2** | **Compounds from *Vitex nigundo* for enhancing antibiotic activity and overcoming drug resistance** | **Kamal Dev, Anuradha Sourirajan, Sonika Gupta** | **International Application no. PCT/IN2016/000129** |
| **3** | **Novel benzothiazole derivatives with enhanced biological activity** | **Kalpana Chauhan and Bhawana Kumari** | **International Application no. PCT/IN2016/000207** |

**PCT: Patent cooperation treaty**
**Protected in 148 countries.**

# Design Patent Awarded

ORIGINAL

No. 46230

GOVERNMENT OF INDIA

THE PATENT OFFICE

CERTIFICATE OF REGISTRATION OF DESIGN

| | |
|---|---|
| Design No. | 280329 |
| Date | 11/02/2016 11:46:00 |
| Reciprocity Date* | 00:00:00 |
| Country | |

Certified that the design of which a copy is annexed hereto has been registered as of the number and date given above in class 12-04 in respect of the application of such design to FLYING CHAIR in the name of SHOOLINI UNIVERSITY OF BIOTECHNOLOGY AND MANAGEMENT SCIENCES AND SORABH AGGARWAL, ASSISTANT PROFESSOR OF SHOOLINI UNIVERSITY OF BIOTECHNOLOGY AND MANAGEMENT WHOSE ADDRESS IS POST OFFICE BOX NO. 9, HEAD POST OFFICE, THE MALL, SOLAN, HIMACHAL PRADESH-173212

in pursuance of and subject to the provisions of the Designs Act, 2000 and the Designs Rules, 2001.

INTELLECTUAL PROPERTY INDIA

PATENTS / DESIGNS / TRADEMARKS GEOGRAPHICAL INDICATIONS

Controller General of Patents, Designs and Trade Marks

*The reciprocity date (if any) which has been allowed and the name of the country.
Copyright in the design will subsist for ten years from the date of Registration, and may underthe terms of the Act and Rules, be extended for a further period of five years.
This Certificate is not for use in legal proceedings or for obtaining registration abroad

MRS. KOMPAL BANSAL,
HOUSE NO. 5568, SECTOR 38 WEST,
CHANDIGARH-160036, INDIA

Date of Issue 05/07/2016 14:36:27
NF

# Schedule of Events

| Time | Events |
|---|---|
| 9:30 AM | Registration |
| 10:00 AM<br><br>Inauguration | -Introduction to IPR Workshop: **Dr Kamal Dev**.<br>-Welcome Address: **Prof. Sunil Puri**, Registrar, SU<br>- Key note address: **Shri Kunal Satyarthi,** IFS, SCSTE |
| 11:00 AM | Tea break |
| 11:15 AM | **Dr Parikshit Bansal:** IP Basics and **Usefulness of Patents** for Scientists and Students (Director, Corporate IP Consultants, Chandigarh). |
| 12:00 NOON | **Dr. Archana Thakur:**<br>Importance of **Prior Art** in Research (Woman Scientist Fellow, DST/TIFAC). |
| 12:30 PM | **Mr. Ankush Sharma:** Trademark Introduction and filing procedure (Project Scientist, HPPIC). |
| 1:00 PM | Lunch (Venue: Pine court) |
| 2:00 PM | **Dr. Archana Thakur:** Geographical Indications of Himachal Pradesh (Woman Scientist Fellow, DST/TIFAC). |
| 2:25 PM | **Dr Nandan Sharma:** Copyrights (Assistant Professor, MAU, Baddi). |
| 2:50 PM | **Mr Chandar Mohan Gupta**: IPR quiz competition (Assistant Professor, SU) - Winner will get prize |
| 3:15 PM | **Felicitation** of Shoolini Inventors by Corporate IP Consultants, Chandigarh. |
| 4:15 PM | **Vote of Thanks** and Certificate distribution. |

# THANK YOU

**Report on IPR workshop held at Shoolini University on 16 March 2017**

“Knowledge based economy" plays a key role in wealth creation. Intellectual property (IP) is a method for legally protecting this knowledge. Shoolini University provides opportunity and environment where creativity and talent can flourish. Our scientists are focusing on emerging areas of research such as drug development, novel and effective diagnostics and trerapeutics, water and effluent treatment, novel industrial enzymes, phytomedicines, etc. Keeping in mind the importance of IP, IPR cell was established in 2015. Shoolini University has taken a lead in the region to file 37 Indian patents and 3 PCT (Patent cooperation treaty) in a short span of one and a half year. To promote and inculcate IPR awareness, we organize special seminar and workshops. Based on our research and IP strength, DST-Sponsored IPR cell has been sanctioned to Shoolini University. This cell will work in close collaboration with HP patent information Center (HPPIC) housed in the State Council for Science, Technology, and Environment, H.P (SCSTE). To promote awareness of intellectual property rights of the individual, Shoolini University has created an annual budget of Rs 15 lakh for the year 2016-17.

To promote awareness about IPR and GI among students and faculty members, a one day workshop on intellectual property rights (IPR) and geographical indications (GI) was jointly organized by IPR Cell at Shoolini University, Faculty of Applied Sciences and Biotechnology and SCSTE, Shimla. More than 225 delegates attended the workshop. Prof. Kamal Dev, coordinator of IPR cell briefed about the genesis of the workshop and highlighted the cutting edge research areas in which Shoolini University has filed 37 Indian patents and 3 international patents. He highlighted the thrust areas of IPR cell at Shoolini University. Prof. Sunil Puri, Registrar formerly welcome the dignitaries and

stressed on vision and mission of the University in promoting IPR culture among students and faculty members. The Chief Guest of the function, Shri Kunal Satyarthi, IFS, joint member secretary, SCSTE briefed the audience about the role of Himachal Pradesh patent information center (HPPIC) and SCSTE. He said that Government has taken initiatives to create biodiversity board at the Gram Panchayat level to protect the indigenous Geographical indications and traditional knowledge. He stressed on the need to inculcate IPR awareness in young minds and ignite scientific temper about patents, copyright, trademark, geographical indications. He also briefed about the thrust areas of the SCSTE, where Shoolini University could play a joint role. Dr Archana Thakur and Mr Ankush from SCSTE talked about the role and importance of prior art search and trademarks respectively. Dr Parikshit Bansal, Director Corporate IP consultants, Chandigarh talked about the importance of IPR to students and scientists of the University. Corporate IP Consultants felicitated all the shoolini Inventors. Dr Nandan, MAU, Baddi spoke on importance of copyright. A quiz session on IPR was also conducted. The workshop was closed with vote of thanks to Chief guest, Shri Kumal Satyarthi, SCSTE, HPPIC for sponsoring the workshop and all the participants by Prof. Neeraj Mahindroo.

Prof. Kamal Dev

Coordinator

SIPRC (Shoolini Intellectual Property Right Cell)

Shoolini University

Solan

Email: kamaldev@shooliniuniversity.com

Phone: +91-9418653905

Shoolini University
18th April, 2013

Shoolini University
IPR CELL
&
FACULTY OF APPLIED SCIENCES AND BIOTECHNOLOGY
SHOOLINI UNIVERSITY, SOLAN
&
HIMACHAL PRADESH PATENT INFORMATION CENTRE(HPPIC), SCSTE,
SHIMLA, H.P.
JOINTLY ORGANIZED